

डॉ. डेविड टर्नर, मैथ्यू लेक्चर 12A - मैथ्यू 27: जीसस पैशन II: रोमन सुनवाई, क्रूस पर चढ़ना, और मृत्यु

मैथ्यू व्याख्यान 12a में आपका स्वागत है। इस व्याख्यान में, हमारे प्रभु के दुख पर हमारा दूसरा व्याख्यान, हम मैथ्यू अध्याय 27 में रोमन अधिकारियों के समक्ष यीशु की सुनवाई, उनके क्रूस पर चढ़ने और उनकी मृत्यु को कवर करने जा रहे हैं। हम मैथ्यू 27, श्लोक 1 से 10 में यहूदा की आत्महत्या के साथ अपने निष्कर्ष पर पहुंचने की दयनीय कहानी से शुरू करते हैं।

सबसे पहले, हम इस अंश पर संक्षेप में चर्चा करेंगे और फिर पतरस के इनकार की तुलना में यहूदा के विश्वासघात पर कुछ टिप्पणियाँ करेंगे। मत्ती 27:1 से 10, 26:57 से 68 की परीक्षण कहानी की निरंतरता के रूप में शुरू होता है, जिसे 26:69 से 75 में पतरस के इनकार की कहानी द्वारा निलंबित कर दिया गया था। लेकिन 27:1 और 2 के बाद, विषय 27:3 से 8 में यहूदा की आत्महत्या की कहानी में बदल जाता है, जिसे मत्ती ने भविष्यवाणी की पूर्ति के रूप में देखा है, 27:9 और 10।

मत्ती के पूरे जुनून की कहानी में कहानी का पैटर्न सहायक पात्रों और मुद्दों के बारे में कहानियों को यीशु की पीड़ा की मुख्य कहानी में शामिल करना रहा है। इनमें से कुछ सहायक पात्रों और मुद्दों को 26:6 से 13, 26:20 से 35 और 27:3 से 10 जैसे अंशों में शामिल किया गया है। और ये मूल रूप से यीशु और उनके जुनून पर ध्यान केंद्रित करने में बुने गए हैं।

27:9 और 10 में, मैथ्यू की पुराने नियम की विशिष्ट, विशिष्ट समझ, एक पूर्ति सूत्र के साथ व्यक्त की गई, जो उनके सुसमाचार में अंतिम बार घटित होती है। मैथ्यू जाहिर तौर पर जकर्याह 11:7 में वध के लिए अभिशप्त चरवाहे को यीशु के अनुरूप समझता है, और जकर्याह 11:13 में प्रभु के घर में कुम्हार को फेंके गए 30 चांदी के टुकड़ों को यहूदा द्वारा मंदिर में फेंके गए धन के अनुरूप समझता है, जिसका उपयोग मुख्य पुजारियों द्वारा कुम्हार के खेत में किया जा रहा था। मैथ्यू इस कहानी को जकर्याह के अनुरूप नहीं बनाता है, बल्कि वह पुराने नियम में ऐसे पैटर्न खोजने के उद्देश्य से भविष्यवक्ताओं को पढ़ता है जिसमें पुराने नियम का कोई व्यक्ति या घटना यीशु के जीवन और सेवकाई से कुछ की आशा करती है।

अब यहूदा का विश्वासघात और पतरस का इनकार। पतरस के अस्थायी चूक के बाद उसके पश्चाताप की तुलना और उसके अंतिम विश्वासघात के बाद यहूदा के पश्चाताप से तुलना करना दिलचस्प है। दोनों ही कृत्य निस्संदेह घृणित थे, लेकिन पतरस का पश्चाताप यहूदा के पश्चाताप से कहीं कम है।

पतरस यीशु का अनुसरण करने वाले जीवन में वापस लौटता है और चर्च में अपने विशेष पद पर बहाल होता है, 28:18 से 20। यूहन्ना के सुसमाचार 21:15 और उसके बाद की तुलना करें। आरंभिक चर्च में पतरस की प्रमुख सेवकाई का उल्लेख करना स्पष्ट बात को और अधिक स्पष्ट करना है।

पतरस बदल गया। लेकिन यहूदा का पश्चाताप उद्धार के लिए वास्तविक पश्चाताप के करीब कुछ भी नहीं है। यह 27 :3 में पश्चाताप के लिए एक अलग ग्रीक शब्द के उपयोग से स्पष्ट नहीं है, शब्द मेटामेलोमाई , जो मेटानोइया, पश्चाताप, या मेटानोइओ, पश्चाताप करने के लिए शब्द से अलग है ।

माना कि यहूदा ने अपने पाप को स्वीकार किया और उसने अपने खून के पैसे भी लौटा दिए। लेकिन यहूदा ने कभी भी यीशु से क्षमा मांगने या शिष्यों के साथ फिर से जुड़ने का प्रयास नहीं किया। उसकी आत्महत्या पश्चाताप नहीं, बल्कि निराशाजनक निराशा का संकेत है।

मती में, पश्चाताप को फलों के रूप में चित्रित कार्यों द्वारा दर्शाया गया है। 3:8 से 10:7, 16 से 20, और 13:38 से 40 जैसे अंश इसे स्पष्ट करते हैं। यहूदा को उसकी आत्महत्या के लिए याद किया जाता है, जो स्वयं निर्गमन 21:23 की छठी आज्ञा का उल्लंघन है।

मती 26:24 और यूहन्ना 6 के सुसमाचार, श्लोक 70 और 17:12 जैसे अंशों को देखते हुए, हम यह उम्मीद नहीं कर सकते कि यहूदा एक बचा हुआ व्यक्ति था। बल्कि, हमें चेतावनी दी जानी चाहिए क्योंकि वह खो गया था। यहूदा को कभी-कभी ईसाई विद्वानों द्वारा एक गंभीर गलती के रूप में देखा जाता है, जो कि पूरे यहूदी लोगों की विशेषता है ।

जिस तरह यीशु के दिनों के भ्रष्ट यहूदी विद्वान पूरे राष्ट्र का प्रतिनिधित्व नहीं करते, किसी भी बाद के समय में यहूदी लोगों की तो बात ही छोड़िए, यहूदा भी ऐसा नहीं करता। यहूदा को अपने समय या किसी अन्य दिन के यहूदी लोगों के विशिष्ट व्यक्ति के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। यीशु ने बारह शिष्यों को बुलाया, और वे सभी यहूदी थे।

उनमें से केवल एक ने यीशु को धोखा दिया और खो गया। ग्यारह को उनके मसीहा के लिए सेवा में बहाल किया गया, और वे चर्च के लिए नींव बन गए। रोमियों 9 से 11 के अनुसार, चर्च का जल्दी से मुख्य रूप से गैर-यहूदी निकाय बन जाना ईश्वरीय ज्ञान और संप्रभुता का रहस्य है।

लेकिन गैर-यहूदी विश्वासियों को अपने विश्वास की यहूदी जड़ों को कभी नहीं भूलना चाहिए। और अब हम अपने प्रभु के परीक्षण के दूसरे चरण, या 27, आयत 11 से 26 में पिलातुस के समक्ष उनकी सुनवाई की ओर बढ़ते हैं। सबसे पहले, इस अंश को संक्षेप में समझाने के लिए, पिलातुस के समक्ष यीशु के परीक्षण में यीशु से पूछताछ के दो चक्र शामिल हैं, 27:11, और 26:12, 14, इसके बाद फसह पर प्रथागत कैदी रिहाई और 27:15, और 16 में बरब्बास की उपलब्धता की व्याख्या की गई है।

फिर 27:17 से 20 और 27:21 में पिलातुस द्वारा भीड़ से पूछे जाने वाले दो चक्र हैं, फिर 27:23, 27:24 और 25 में पिलातुस द्वारा यीशु की बेगुनाही के दो विरोध प्रदर्शन हैं। इसके बाद 27:26 में यीशु को सूली पर चढ़ाए जाने की घटना है। पिलातुस और भीड़ के अलावा, इस संक्षिप्त कहानी में दो अन्य पात्र हैं, पिलातुस की पत्नी, जो यीशु के पक्ष में है, 27:19, और प्रमुख पुजारी और बुजुर्ग जो, निश्चित रूप से, यीशु के खिलाफ हैं, 27:12।

दुर्भाग्य से, भीड़ और पिलातुस दोनों ही यहूदी नेताओं से प्रभावित हैं, पिलातुस की पत्नी से नहीं। इस कहानी में पिलातुस का चित्रण सकारात्मक तरीके से नहीं, बल्कि दयनीय तरीके से किया गया है, जैसा कि कुछ लोगों ने कहा है। वह यहूदी नेताओं के साथ झंझटों से बचने के लिए किसी ऐसी चीज में शामिल होने को तैयार है, जिसे वह अन्यायपूर्ण मानता है।

मत्ती 27:20 से 25 में, यहूदी-विरोधी भावना के बारे में एक और महत्वपूर्ण मुद्दा है। मत्ती 27:20 से 25 मत्ती 23 के साथ-साथ एक ऐसे मार्ग के रूप में अपना स्थान लेता है जिसे अक्सर स्पष्ट रूप से यहूदी-विरोधी के रूप में उद्धृत किया जाता है। कुछ लोग निष्कर्ष निकालते हैं कि मत्ती ने रोमियों को दोषमुक्त या दोषमुक्त करने और यहूदियों को दोषी ठहराने या दोषी ठहराने के लिए पिलातुस को सकारात्मक रूप से चित्रित किया है, हिल की टिप्पणी इसी प्रभाव के लिए है।

लेकिन मैथ्यू का पिलातुस का चित्रण वास्तव में उतना सकारात्मक नहीं है। यह पिलातुस को असुरक्षित और अन्यायी के रूप में प्रस्तुत करने में अन्य प्राचीन स्रोतों के साथ मेल खाता है। पिलातुस जानता है कि यीशु निर्दोष है, लेकिन वह न्याय की विफलता को रोकने के लिए हस्तक्षेप नहीं करता है।

वह जानता है कि बरअब्बास के बजाय यीशु को रिहा किया जाना चाहिए, लेकिन वह भीड़ की इच्छा को स्वीकार करता है क्योंकि ऐसा करना उचित है। उसका प्रतीकात्मक हाथ धोना दयनीय रूप से अपर्याप्त और पाखंडी है, जो यहूदिया में न्याय करने के लिए सम्राट द्वारा नियुक्त एक व्यक्ति से आ रहा है। हाथ धोने का मतलब यह दिखाना है कि पिलातुस भीड़ की इच्छा से सहमत नहीं है।

लेकिन भीड़ कब से फैसले लेने लगी है? अगर पिलातुस सहमत नहीं है, तो उसे भी इसकी अनुमति नहीं देनी चाहिए। पिलातुस एक कायर शासक के रूप में सामने आता है जो अपनी जिम्मेदारी से मुंह मोड़ लेता है। उसकी एकमात्र चिंता यह है कि यह सब उस पर क्या प्रभाव डालता है।

उसके पास अपनी पत्नी की सलाह मानने और यीशु को अकेला छोड़ने के लिए भी पर्याप्त साहस नहीं है। डेविस और एलीसन टिप्पणी करते हैं, पिलातुस की उपाधि विडंबनापूर्ण है। राज्यपाल शासन को दूसरों पर छोड़ देता है।

इस प्रकार, पिलातुस को यीशु को क्रूस पर चढ़ाने की अनुमति देने के लिए दोषी होना पड़ता है। लेकिन मैथ्यू के प्रसिद्ध रक्त परिवाद पाठ, 27:25 का क्या, जहाँ भीड़ यीशु के खून को अपने और अपने वंशजों के ऊपर ले जाती है? क्या इस पाठ का उद्देश्य यहूदियों को हमेशा के लिए एक राष्ट्र के रूप में दोषी ठहराना है? पिलातुस के हाथ धोने और यीशु की मृत्यु के लिए जिम्मेदारी से इनकार करने के जवाब में, भीड़ स्पष्ट रूप से अपने और अपने बच्चों के लिए उस जिम्मेदारी को स्वीकार करती है। चर्च के इतिहास के दौरान इस अंश को अक्सर यह शिक्षा देने के रूप में समझा गया है कि एक राष्ट्र के रूप में यहूदियों को घृणित मसीह-हत्यारों के रूप में देखा जाना चाहिए।

इस बिंदु पर बेयर की टिप्पणियों पर ध्यान दें। यह व्याख्या सतह पर स्पष्ट रूप से गलत है, क्योंकि चर्च के सभी संस्थापक यहूदी थे और चर्च के इतिहास में कई यहूदियों ने यीशु पर विश्वास किया है। मैथ्यू एक यहूदी है जो यहूदी मसीहा यीशु की पहचान को लेकर गैर-ईसाई यहूदियों के साथ संघर्ष में ईसाई यहूदियों को लिख रहा है।

एक तरीका यह है कि वे मत्ती 27:25 को काल्पनिक मानते हैं। बेयर ऐसा करने वालों में से एक है। लेकिन यह केवल इस अनुच्छेद की ऐतिहासिकता के बारे में एक गलती को इसके अर्थ के बारे में पिछली गलती में जोड़ता है।

सतह पर, यह पाठ पिलातुस और उनके बच्चों के सामने उपस्थित लोगों तक ही सीमित है, न कि उस समय या किसी अन्य समय में एक राष्ट्र के रूप में यहूदियों तक। यह टिप्पणी क्षण की गर्मी में की गई है, न कि सावधानीपूर्वक तर्कपूर्ण धार्मिक प्रस्ताव के रूप में। इस बात की कोई गारंटी नहीं है कि अनुग्रह का परमेश्वर भीड़ को उसके जल्दबाजी में दिए गए बयान पर रोकेगा, ठीक उसी तरह जैसे बारह शिष्यों को यीशु को छोड़ने के लिए और पतरस को तीन बार यीशु को अस्वीकार करने के लिए अक्षम्य नहीं माना जाएगा।

और निश्चित रूप से इस बात की कोई गारंटी नहीं है कि न्याय का परमेश्वर पिलातुस को उसके संकोच और अपने हाथों को साफ करने के खोखले दिखावे के लिए क्षमा करेगा। यदि मैथ्यू के सुसमाचार में कुछ स्पष्ट है, तो वह यह है कि यीशु पापियों को बुलाने के लिए आया था। 9:13 और 21:31 जैसे अंशों में कर संग्रहकर्ताओं और वेश्याओं जैसे कुख्यात लोगों द्वारा उनका उदाहरण दिया गया है। इस तरह के पापी संभवतः उस भीड़ में प्रचलित होंगे जिसने यीशु के खून की जिम्मेदारी ली थी, और इसमें कोई संदेह नहीं है कि, मैथ्यू के धर्मशास्त्र में, ऐसे पापियों को पश्चाताप करने पर क्षमा कर दिया जाएगा।

मैथ्यू के सुसमाचार में यह भी स्पष्ट है कि यीशु ने अपनी सबसे कठोर आलोचना धार्मिक नेताओं के लिए बचाकर रखी है, जिन्हें वह पाखंडी मानते हैं। शायद यह विषय मैथ्यू 27:25 के रक्त परिवाद के प्रति प्रतिक्रिया का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। 27:20 में एक व्यक्ति ने नोट किया कि यह प्रमुख पुजारी और बुजुर्ग थे जिन्होंने भीड़ को बरब्बास के लिए पूछने के लिए राजी किया। यदि यीशु के यहूदी समकालीन एक विशेष रूप से दुष्ट पीढ़ी थे, जैसा कि 12:45 और 23:36 में कहा गया है, तो यह काफी हद तक इसलिए था क्योंकि उनके नेता खुद विशेष रूप से दुष्ट थे।

इस्राएल के ये भ्रष्ट नेता ही 27:25 में भीड़ के दुर्भाग्यपूर्ण बयान के लिए जिम्मेदार हैं, और इस प्रकार भीड़ के उग्र अनुरोध के लिए पिलातुस की असिद्धांतहीन स्वीकृति के लिए भी। यह यीशु के इस्राएल के नेताओं के साथ संघर्ष के मिथियन विषय के साथ पूरी तरह से मेल खाता है। एक अर्थ में, ये नेता यीशु के खून के लिए जिम्मेदार हैं, लेकिन सबसे गहरे अर्थ में, सभी मनुष्य, यहूदी और गैर-यहूदी समान रूप से, पापों को क्षमा करने और नई वाचा का उद्घाटन करने के लिए यीशु द्वारा अपना खून बहाने के लिए जिम्मेदार हैं।

अंततः, जो लोग यीशु पर विश्वास नहीं करते, यहूदी और गैर-यहूदी समान रूप से, उनके खून के लिए जिम्मेदार ठहराए जाएंगे। अब हम अपने अगले भाग की ओर बढ़ते हैं, जहाँ हम मैथ्यू द्वारा

दिए गए बहुत से संकेतों और यीशु द्वारा उनके क्रूस पर चढ़ने की प्रत्यक्ष भविष्यवाणियों के बाद आखिरकार आ गए हैं। सबसे पहले, हम इस अंश की व्याख्या करते हैं, फिर हम पुराने नियम के कुछ संकेतों से निपटते हैं, फिर से यहूदी-विरोधी प्रश्न पर, और फिर हम संक्षेप में क्रूस पर चढ़ने पर चर्चा करते हैं।

क्रूस पर चढ़ाए जाने की कथा, इस वीभत्स प्रक्रिया के प्रत्येक चरण की एक क्रमिक कहानी है। कहानी 27:27-31 में सैनिकों द्वारा यीशु का मज़ाक उड़ाने, 27:32 में साइमन को क्रूस उठाने के लिए नियुक्त करने, 27:33 में गोलगोथा पहुँचने, 27:34 में शराब चढ़ाने, 27:35 में यीशु को क्रूस पर चढ़ाने, उसी पद में उनके वस्त्रों के लिए जुआ खेलने, 27:36 में बाद में क्रूस पर चढ़ाए जाने का अवलोकन करने और यीशु की पहचान का वर्णन करने वाला एक चिन्ह लगाने से शुरू होती है। अगला भाग 27:38-44 में यीशु के दोनों ओर क्रूस पर चढ़ाए गए क्रांतिकारियों के उल्लेख द्वारा तैयार किया गया एक समावेश है। यहाँ विषय उपहास है, चाहे 27:39-40 में दर्शकों द्वारा, 27:41-43 में यहूदी नेताओं द्वारा, या 27:44 में स्वयं क्रांतिकारियों द्वारा। जैसे मत्ती 4 में यीशु की तीन बार परीक्षा हुई थी, वैसे ही यहाँ भी उसका तीन बार उपहास किया गया है।

लेकिन प्रलोभन और मज़ाक यीशु के पुत्रत्व पर केंद्रित हैं। शैतान और यीशु का मज़ाक उड़ाने वाले दोनों ही उसे बिना कष्ट के शासन करने के विकल्प के साथ सामना करते हैं, लेकिन दोनों बार, यीशु को ऐसा कुछ भी पसंद नहीं आएगा। इस मार्ग का मज़ाक विशेष रूप से विडंबनापूर्ण है, क्योंकि यीशु वास्तव में परमेश्वर का पुत्र है।

मंदिर एक पीढ़ी के भीतर नष्ट हो जाएगा। यीशु वास्तव में दूसरों को बचाता है। वह इस्राएल का राजा है।

वह परमेश्वर पर भरोसा करता है, और परमेश्वर उससे बहुत प्रसन्न होता है। वह क्रूस से नीचे नहीं उतरता, लेकिन वह मृत्यु पर विजय प्राप्त करता है। उपहास का प्रत्येक बिंदु, वास्तव में, अंततः सत्य साबित होता है।

इस प्रकार, एक बहुत ही अजीब तरीके से, मज़ाक उड़ाने वाले अनजाने में प्रचारक हैं। 27:27-31 में सैनिकों की हरकतों से ज़्यादा विडंबना कभी नहीं देखी गई, जिन्होंने यीशु को राजा की तरह कपड़े पहनाए और उन्हें श्रद्धांजलि देने का नाटक किया। क्रूर मज़ाक में सैनिकों ने जो किया, वह इस बात की भविष्यवाणी है कि किसी दिन वास्तव में क्या होगा। क्रूस पर चढ़ाए जाने के बाद, यीशु को मनुष्य के गौरवशाली पुत्र के रूप में उंचा किया जाएगा और उसे सारा अधिकार दिया जाएगा।

28:18. परमेश्वर के शासन का उनका संदेश पृथ्वी के सभी राष्ट्रों से इच्छुक प्रजा को जीत लेगा। युग के अंत में, वह राजा के रूप में वापस आएगा और 25:31 के अनुसार अपने गौरवशाली सिंहासन पर बैठेगा। चीजें हमेशा वैसी नहीं होतीं जैसी वे दिखती हैं, और कभी-कभी चीजें बिल्कुल वैसी नहीं होतीं जैसी वे दिखती हैं। हमने आपके लिए इस अंश में पुराने नियम के संकेतों को सूचीबद्ध किया है, जो काफी प्रमुख हैं।

ये आपके पूरक सामग्रियों में पाए जाते हैं, इस व्याख्यान की रूपरेखा के ठीक अगले पृष्ठ पर पृष्ठ 50 पर। इन उद्धरणों और संकेतों में भजन 22 के बार-बार उल्लेख पर विशेष रूप से ध्यान दें। और हम व्याख्यान में उन पर गौर करने के लिए और अधिक समय नहीं लेंगे।

यह कुछ ऐसा है जिसे आप स्वयं करने में रुचि रखते होंगे। फिर से, हमें यहाँ यहूदी-विरोधी भावना के प्रश्न से निपटना होगा। यह महत्वपूर्ण है कि शायद क्रूस पर चढ़ाए जाने की कथा में यीशु का सबसे क्रूर उपहास करने वाले 27:27-31 में गैर-यहूदी हैं। यह यहूदियों द्वारा यीशु को अस्वीकार करने और गैर-यहूदियों द्वारा यीशु को स्वीकार करने की सरल पहचान पर सवाल उठाता है, जो मैथ्यू के धर्मशास्त्र के कुछ गलत उपचारों में पाया जाता है।

मैथ्यू में ऐसे यहूदियों के उदाहरण हैं जो यीशु से प्यार करते हैं और ऐसे गैर-यहूदी भी हैं जो उनसे नफरत करते हैं। फ्रांस, अपने 1985 के खंड में, 27:44 पर टिप्पणी करते हुए बहुत आगे निकल जाता है जब वह कहता है कि उसके लोगों द्वारा यीशु को पूरी तरह से अस्वीकार कर दिया गया है। बल्कि, क्रूस पर चढ़ाए जाने की कहानी में सभी मज़ाक करने वाले यहूदी नहीं हैं, 27:27-31, और 27:55-57 के अनुसार सभी यहूदी मज़ाक करने वाले नहीं हैं। इसलिए, मैथ्यू पर यहूदियों के बारे में पूरी तरह से नकारात्मक दृष्टिकोण रखने या गैर-यहूदियों के बारे में इसी तरह से पूरी तरह से सकारात्मक दृष्टिकोण रखने का आरोप नहीं लगाया जाना चाहिए।

अब, सूली पर चढ़ाने के बारे में कुछ बातें, जो अब तक की कल्पना की गई सबसे भयानक सज़ा है। सबसे पहले, एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य। कम से कम कहें तो सूली पर चढ़ाना क्रूर और असामान्य सज़ा थी।

जोसेफ़स ने भी इसी तरह की बात कही है, जैसा कि अन्य प्राचीन लेखक करते हैं। रोमनों ने दासों, कुख्यात अपराधियों और विद्रोहियों के मामलों में राजनीतिक बयान देने के लिए इसका इस्तेमाल किया। क्रूस पर चढ़ाने ने रोम के प्रभुत्व को विजित लोगों पर स्थापित किया, जो किसी भी व्यक्ति का भयानक उदाहरण था, जिसने रोमन शांति, पैक्स रोमाना को परेशान करने की हिम्मत की।

जोसेफ़स के अनुसार, 70 ई. में यरूशलेम की घेराबंदी के दौरान इसका अक्सर इस्तेमाल किया गया था। हालाँकि, प्रथाएँ कुछ हद तक अलग-अलग थीं, लेकिन क्रूस पर चढ़ाने में अक्सर पीड़ित के टखनों के माध्यम से क्रॉस के ऊर्ध्वाधर खंभे में एक लंबी कील ठोकना और पीड़ित के फैले हुए हाथों या कलाई के माध्यम से क्रॉस के क्षैतिज बीम में कील ठोकना शामिल था। कील के बारे में लूका 24:39, यूहन्ना 20:25 और कुलुसियों 2:14 पर ध्यान दें।

श्वासावरोध, यानी सांस की कमी से मरते हैं। उन्हें अंततः अपने पैरों से अपना वजन संभालने में कठिनाई होती है।

फिर हाथों से लटके रहने पर सांस लेना मुश्किल हो जाता था। इस वीभत्स प्रक्रिया में कई दिन लग सकते थे। कई बार, जल्लाद प्रक्रिया को तेज़ करने के लिए पीड़ितों के पैर तोड़ देते थे, लेकिन जॉन 19:31-33 के अनुसार, यीशु के मामले में ऐसा करना ज़रूरी नहीं था। एक और

सिद्धांत यह है कि सूली पर चढ़ाए जाने से पहले कोड़े मारने और कीलों के घाव से निर्जलीकरण और खून की कमी से मृत्यु हो जाती थी।

अब, क्रूस पर चढ़ने पर एक धार्मिक दृष्टिकोण। मैथ्यू में क्रूस पर चढ़ने की कहानी यीशु की अस्वीकृति की कहानी की परिणति है। यह इस बात पर जोर देता है कि किस तरह से विभिन्न दल, दर्शक, यहूदी नेता और यीशु के साथ क्रूस पर चढ़े क्रांतिकारी सभी ने उनका मजाक उड़ाया।

उनकी सोच में क्रूस पर चढ़ाए जाने से यीशु मसीहाई पद के लिए एक नपुंसक दावेदार के रूप में सामने आते हैं। लेकिन यीशु उस तरह के सैन्य मसीहा नहीं हैं जिनसे वे रोम के दमनकारी जुए को हटाने की उम्मीद करते हैं। यीशु और उनसे पहले जॉन व्यक्तिगत यहूदी पश्चाताप की मांग करते हैं, रोम के खिलाफ युद्ध की नहीं।

यीशु के मसीहाई मूल्यों को 12:14-21 में सबसे स्पष्ट रूप से दर्शाया गया है। वहाँ फरीसी यीशु को मारने की योजना बना रहे हैं क्योंकि उनके अनुसार सब्त के दिन उनका चंगा करना काम के बराबर है। लेकिन जवाब में, यीशु संघर्ष से हट जाते हैं, और चंगाई के बारे में चुप रहने की सलाह देते हैं। यह यशायाह 42:1-4 को पूरा करता है, जो सेवक के बारे में बताता है कि वह पिता को प्रसन्न करता है, जो आत्मा से संपन्न है, जो घोषणा करता है और सड़कों पर विद्रोह को बढ़ावा नहीं देता है, और जो अन्यजातियों की आशा बन जाता है।

राज्य का निर्माण तलवार से नहीं, 26:52, बल्कि एक समय में एक पश्चातापी शिष्य द्वारा किया जाता है। इस मसीहाई मॉडल में, न्याय सैन्य कौशल से नहीं बल्कि व्यक्तिगत पश्चाताप और दूसरों के प्रति विनम्र सेवा से प्राप्त होता है। लेकिन यहूदी धार्मिक प्रतिष्ठान को इससे कोई मतलब नहीं होगा।

राज्य के मूल्यों को मॉडल करने के अलावा, क्रूस पर चढ़ना उन मूल्यों को अभ्यास में लाने के लिए आवश्यक छुटकारे को पूरा करता है। यीशु अपने लोगों को उनके पापों से बचाता है, 1:21, उनके लिए फिरौती के रूप में अपना जीवन देकर, 20:28। इस फिरौती में उनके पापों को क्षमा करने के लिए उनके रक्त को बलिदान के रूप में बहाना शामिल है, 26:28। टोरा किसी भी व्यक्ति पर श्राप का उच्चारण करता है जिसे पेड़ पर लटका दिया जाता है, व्यवस्थाविवरण 21, श्लोक 22 और 23। यशायाह 53, श्लोक 3-6 की तुलना करें।

नए नियम के अन्य लेखकों ने प्रतिनिधि बलिदान की तर्ज पर इस धारणा को विकसित किया। क्रूस पर, यीशु ने अपने लोगों के पापों के लिए अभिशाप और दंड को सहन किया ताकि उन्हें स्वयं उस अभिशाप को न सहना पड़े। प्रेरितों के काम 5:30, 10:39, 13:29 और 1 पतरस 2:24 जैसे अंशों में व्यवस्थाविवरण 21, पद 22 और 23 के सूक्ष्म संकेत हैं। पौलुस स्पष्ट रूप से व्यवस्थाविवरण 21, पद 22 और 23 और गलातियों 3:13 का हवाला देता है, दोनों इस आशय से कि यीशु ने अपने लोगों के अपराध और उनके पाप को अपने ऊपर ले लिया, और इस तरह उनकी क्षमा और मुक्ति प्राप्त की।

रोमियों 3:24-26, 1 कुरिन्थियों 1:23-24, 2 कुरिन्थियों 5:21, और 1 तीमुथियुस 2:6 जैसे अंशों को देखें। पौलुस ने क्रूस पर चढ़ाए जाने के धर्मशास्त्र को और भी आगे बढ़ाया, यह सिखाते हुए कि यीशु में विश्वास करने वाला व्यक्ति खुद को आदम के साथ एकजुटता में पाप के पुराने जीवन की मृत्यु में यीशु के साथ महत्वपूर्ण रूप से पहचान लेता है, और यीशु के साथ एकजुटता में एक नए जीवन के लिए पुनरुत्थान करता है। इसलिए, पौलुस रोमियों 5:12-6:11, 1 कुरिन्थियों 15:20-22, गलातियों 2:20-6:14, इफिसियों 2:1-6, और 4:22-24, कुलुस्सियों 2:8-15, और 3:1-4 जैसे अंशों में हमारे मसीह के साथ मरने और एक नए जीवन में जी उठने की बात करता है। क्रूस के छुटकारे के प्रभाव के बारे में पौलुस की समझ भी मैथ्यू के गैर-यहूदियों के लिए मिशन पर जोर देती है, क्योंकि मसीह में नया जीवन उन सभी के साथ समुदाय में जीया जाता है जो यीशु में विश्वास करते हैं, चाहे वे यहूदी हों या गैर-यहूदी। रोमियों 15:7-12, इफिसियों 2:11-22 और कुलुस्सियों 3:9-11 को देखें। अब मैथ्यू के सुसमाचार में सबसे भयानक घटना की बात करें, 27 आयतों 45-56 में मैथ्यू द्वारा यीशु की मृत्यु का विवरण।

यीशु की मृत्यु वह घटना है जिसकी ओर मत्ती की सारी कथाएँ इशारा करती हैं। एक अर्थ में मत्ती 1:25, 26-28 में जुनून की कथा का परिचय है, और जुनून की कथा का केंद्रबिंदु यीशु की मृत्यु है। यीशु की मृत्यु के बारे में मत्ती का वर्णन क्रूस पर चढ़ाए जाने के बारे में उनकी पिछली सामग्री की तरह ही है।

वह घटना के विवरण को छोड़ देता है और इसके बजाय दूसरों की हरकतों पर जोर देता है, जो विडंबना और पुराने नियम के भ्रम से भरे हुए हैं। यीशु की मृत्यु के बाद अंधकार छा जाता है और चट्टान को चीरने वाला भूकंप आता है। इस प्रकार प्रकृति स्वयं घटना के अशुभ युगान्तकारी महत्व की गवाही देती है।

यीशु का प्रत्यक्ष प्रेतबाधा 27:46 पर समाप्त हो जाता है, और वहाँ यीशु की वीरान पुकार पूरे बाइबल में सबसे गहन शब्दों में से कुछ के साथ अंधकार को चीरती है। 1:23, 3:17, 11:27, 16:16, और 17:5 जैसे अंशों के संदर्भ में जो व्यक्ति अद्वितीय रूप से परमेश्वर का पुत्र था, उसे परमेश्वर द्वारा कैसे त्याग दिया जा सकता है, यह हैगनर के अनुसार, संपूर्ण सुसमाचार कथा के सबसे अभेद्य रहस्यों में से एक है। आमीन।

यह यीशु की ओर से विश्वास की कमी नहीं है, बल्कि अपने पिता द्वारा त्यागे जाने पर सबसे गहरे कल्पनीय दर्द की अभिव्यक्ति है। फिर भी यीशु द्वारा महसूस किया गया त्याग केवल अस्थायी है, और जल्द ही उसका औचित्य सिद्ध होने वाला है। 27:47-49 के अनुसार, यीशु की परित्याग की पुकार को अंत तक देखने वालों ने गलत समझा। जो कुछ घटित हुआ है उसके वास्तविक महत्व से अनजान, वे कल्पना करते हैं कि यीशु एलियाह को बुला रहे हैं।

हालाँकि वे पहले भी यीशु का मज़ाक उड़ाते रहे हैं, लेकिन अब उनमें से कुछ लोग गंभीरता से उम्मीद करते हैं कि एलियाह चमत्कार करके यीशु को बचाएँगे। लेकिन यीशु ज़रूरतमंदों की मदद करने के लिए चमत्कार करते हैं, न कि उन्हें उत्साहित करने के लिए। इसके अलावा, उन्हें पिता द्वारा उनके सामने रखे गए दुख के प्याले का निचोड़ पीना होगा।

उसकी मृत्यु उसके लोगों को उनके पापों से बचाने के लिए फिरौती के रूप में उसके रक्त को बहा देने के समान है। चूँकि 27:27-49 में वर्णित लोग यीशु की पीड़ा के वास्तविक महत्व को नहीं समझते हैं, इसलिए एलिय्याह के आने के बारे में उनकी अटकलें सिर्फ उपहास का एक अधिक सूक्ष्म रूप हैं। 27:51 में यीशु की मृत्यु के समय भूकंप ने मंदिर के पर्दे और यहाँ तक कि चट्टानों को भी चीर दिया, जिससे कब्रें खुल गईं और लोग मृतकों में से जी उठे।

परदे का फटना यीशु को सही साबित करता है, यह दर्शाता है कि वह वास्तव में मंदिर से भी बड़ा था, 12:6। चट्टानों का टूटना और परिणामस्वरूप कब्रों का खुलना स्पष्ट रूप से यीशु के शीघ्र पुनरुत्थान द्वारा गारंटीकृत अंतिम पुनरुत्थान का पूर्वावलोकन है। प्रथम फल के रूप में यीशु के पुनरुत्थान के विवरण के लिए 1 कुरिन्थियों 15:20-23 और प्रकाशितवाक्य 1:5 में पौलुस को देखें। इस्राएल के नेताओं द्वारा यीशु को अस्वीकार करने और उसके अपने शिष्यों द्वारा, यद्यपि अस्थायी रूप से, उसे त्यागने के बावजूद, उसकी मृत्यु के सहानुभूतिपूर्ण गवाह हैं।

यीशु को सूली पर चढ़ाने वाले रोमन सैनिक जब यीशु की मृत्यु के तरीके और उसके परिणामों को देखते हैं, तो वे एक तरह से विश्वासियों में बदल जाते हैं। हो सकता है कि वे मैथ्यू द्वारा ईश्वर के पुत्र की उपाधि से अभिप्राय पूरी तरह से न समझ पाएं, लेकिन उनके शब्द उनके पास मौजूद प्रकाश के प्रति सकारात्मक प्रतिक्रिया और यीशु के शिष्यों द्वारा आगे की गवाही के लिए खुलेपन का संकेत देते हैं। यह संभव है कि उनमें से कुछ शिष्य बन गए हों।

एक और समूह जो काफी हद तक गुमनाम था, उसने यीशु की मृत्यु को देखा, बेशक दर्द और ताने से भयभीत था, लेकिन बाद में आए भूकंप से भी भयभीत था। ये वे महिलाएँ हैं जिनका उल्लेख 27:55 और 56 में किया गया है, जो आने वाले दिनों में यीशु के पुनरुत्थान के बारे में जानने वाली पहली महिलाएँ हैं और फिर पुनर्जीवित यीशु से खुद मिलती हैं, और अंत में शिष्यों को इसके बारे में बताती हैं। यीशु की मृत्यु के वृत्तांत में इन वफ़ादार महिलाओं की प्रधानता, शिष्यों की शर्मनाक अनुपस्थिति के साथ, यीशु के शिष्यों के समुदाय में अंधभक्ति के खिलाफ एक शक्तिशाली चेतावनी है।

में हमारे प्रभु का दफ़नाया जाना। इस अंश में दो भाग हैं। पहला भाग यीशु के दफ़नाने का वर्णन करता है, 27:57-61, और दूसरा, यहूदी नेताओं का डर कि शिष्य यीशु के शरीर को चुरा लेंगे और उसके पुनरुत्थान के भ्रामक दावे करेंगे, 27:62-66। दोनों अनुरोधों, दोनों भागों में पिलातुस से अनुरोध किया जाना और पिलातुस द्वारा अनुरोध स्वीकार करना शामिल है।

कुल मिलाकर, यह खंड मैथ्यू 28 को इस तरह से स्थापित करता है कि यीशु का दफ़नाया जाना और कब्र की रखवाली करना पुनरुत्थान और पहरेदारों के भागने से उलट हो जाता है। इस दिन यीशु ने जो भी दुर्व्यवहार सहा है, उसके बाद, उनके दफ़नाने का तरीका आश्चर्यजनक है, कम से कम कहने के लिए। उन्होंने सूर्यास्त के बाद अपने शरीर को क्रूस पर लटकाए जाने की बदनामी से बचा लिया, एक सूर्यास्त जो अखमीरी रोट्टी के पर्व के दौरान सब्बाथ की ओर ले जाता है।

कम से कम यह तो चोट पर नमक छिड़कने जैसा ही होता। लेकिन यूसुफ आगे आता है और यीशु की भयानक मौत की कहानी को समाप्त करके उसे एक सभ्य दफ़नाता है। यह उचित है

कि 26:6-13 में अनाम महिला द्वारा दफ़नाने के लिए उसका अभिषेक करने के बाद से यीशु को मिला सबसे दयालु व्यवहार है। यहूदी नेताओं का यह डर कि शिष्य यीशु के शरीर को चुरा लेंगे और झूठे पुनरुत्थान के दावों के साथ लोगों को धोखा देंगे, तर्कहीन लगता है, यहाँ तक कि यह व्यामोह की सीमा तक पहुँच जाता है।

यहूदी नेता उन शिष्यों के बारे में बहुत ज़्यादा सोचते हैं जो बिखरे हुए थे, डरे हुए थे, और शायद ही शरीर को चुराने की स्थिति में थे। लेकिन इससे भी बड़ी गलती यह है कि यहूदी नेता यीशु के बारे में बहुत कम सोचते हैं। वे इस संभावना को पूरी तरह से खारिज करते हैं कि परमेश्वर यीशु के वादे के मुताबिक जी उठेगा।

किसी भी घटना में, पुनरुत्थान के बाद के दर्शन 28.9 में पुनरुत्थान के चुराए गए शरीर के सिद्धांत का खंडन करते हैं। यीशु के पुनरुत्थान से उत्पन्न होने वाली साजिश यह दर्शाती है कि अविश्वास अपनी तथाकथित स्वायत्तता को बनाए रखने के लिए किस हद तक जा सकता है। प्रेरितों के काम की पुस्तक इन यहूदी नेताओं के सबसे बुरे डर की आगामी पुष्टि को दर्शाती है। यीशु, जिन्हें उन्होंने सूली पर चढ़ाया था, वास्तव में मृतकों में से जी उठे थे और उन्होंने अपने अनुयायियों को यह संदेश सभी राष्ट्रों तक पहुँचाने का आदेश दिया था।

और आखिरी धोखा, उद्धरण-अनुद्धरण, निश्चित रूप से पहले वाले से भी बदतर साबित हुआ। यह कोई धोखा नहीं था, और यह बेहतर साबित हुआ। अब, अध्याय 28 में एक सारांश और संक्रमण।

मत्ती 27 में यीशु की गिरफ्तारी और यहूदी नेताओं के सामने मुकदमे का नाटक दिखाया गया है, जो अपने भयानक निष्कर्ष पर पहुँचता है, जब यीशु को पिलातुस द्वारा दोषी ठहराया जाता है, सूली पर चढ़ाया जाता है और उसकी मृत्यु हो जाती है। यहूदी नेताओं द्वारा कब्र की रखवाली करके और पत्थर को सील करके उसके पूर्वानुमानित पुनरुत्थान की किसी भी संभावना को नकारने के प्रयास में उसे दफना दिया जाता है। निश्चित रूप से, यह यीशु मसीहा के अनुयायियों के लिए सुसमाचार का सबसे निचला बिंदु है।

लेकिन यीशु के दुश्मनों की जीत सिर्फ अस्थायी है। मैथ्यू इस अध्याय में समानांतर रूप से दो विपरीत विषयों को विकसित करता है। एक तरफ़, यहूदी नेता यीशु के साथ अपने कठोर, क्रूर, मज़ाक उड़ाने वाले व्यवहार को जारी रखते हैं और उनके वध के लिए अपनी पूरी ज़िम्मेदारी स्वीकार करते हैं।

कड़वे अंत तक, यीशु के विरोध में उनकी अद्भुत हठ जारी रहती है। दूसरी ओर, इस्राएल और रोम के अधिकारियों द्वारा उनके उपहास के बीच यीशु को बार-बार सही ठहराया जाता है। यहूदा पश्चातापपूर्वक स्वीकार करता है कि यीशु निर्दोष है, और यहूदी नेता 27:4 में उसे अन्यथा समझाने का प्रयास नहीं करते हैं। यहाँ तक कि पिलातुस भी यहूदी नेताओं के गुप्त इरादों से अवगत है, और अपनी पत्नी के साथ, 27:18 और 19, 23 और 24 में यीशु को निर्दोष मानता है।

पिता की कृपा से मौसम संबंधी घटनाएँ होती हैं जो सूर्य के अंधेरे में जाने पर किए जा रहे अत्याचार के अनुरूप होती हैं और 27:51-53 में एक तरह का औचित्य भी प्रदान करती हैं। रोमन

सैनिकों की एक टुकड़ी यहूदी नेताओं की तुलना में अधिक समझदार है जब वे इन घटनाओं की व्याख्या इस रूप में करते हैं कि 27:54 में यीशु परमेश्वर का पुत्र है। जबकि यह बहस का विषय है कि सैनिकों ने यीशु के दिव्य पुत्रत्व को कितना समझा, उनका ईमानदार कबूलनामा 27:40 और 43 में भीड़ और यहूदी नेताओं के तानों के साथ बिल्कुल विपरीत है। यह कबूलनामा पुनर्जीवित यीशु के लिए अपने शिष्यों को सभी राष्ट्रों में भेजने का मार्ग प्रशस्त करता है, जिन्हें इसी तरह बपतिस्मा में पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम को कबूल करना चाहिए।